★ ॐ ★

तिमिरनाशक ग्रन्थावली नं० १०

बाइबिल-मत-परीक्षा

अर्थात्

वैदिक यज्ञ में मसीही मत की आहुती

लेखक :—

संस्कृत अरबी के प्रसिद्ध विद्वान शास्त्रार्थ महारथी—

श्री पं० कालीचरण जी शर्मा मौ० मु० फ़ाज़िल

साहित्यरत्न तर्क वागीश, कानपुर।

प्रकाशक :—

आर्य मुसाफ़िर बुकडिपो नारियल बाज़ार,

कानपुर

मिलने का पता :—

आर्यसमाज, जबलपुर

आर्य मुसाफ़िर पुस्तकालय, कानपुर

आर्यसमाज, ग्वालियर

प्रथम संस्करण १०००] सर्वाधिकार स्वरक्षित [मूल्य ≈)

मुफ्त बाँटने के लिये ≡) सैकड़ा

गुरु विरजानन्द दण्डी पुस्तकालय

परिग्रहण क्रमांक 5285

प्रकाशक :—

आर्य मुसाफ़िर बुकडिपो

नारियल बाजार

कानपुर

सर्वाधिकार—सुरक्षित

मुद्रक :—

आनन्दकिशोर दीक्षित

मीरा प्रिंटिंग वर्क्स,

हाता राममोहन, कानपुर।

+ ओ३म् +

भूमिका

आजकल इसाइयों ने साधारण तौर पर और अमेरिकन पादरियों ने विशेष तौर पर भारत के अनपढ़ और जंगल निवासी भील गौण आदिवासी सब लोगों को, जो विद्या से विहीन और मानव सभ्यता से कोसों दूर हैं किन्तु उनका जीवन और रहन-सहन साधुओं जैसा है। वह पक्के हिन्दू हैं। उनको साम, दाम, दण्ड, भेद और रुपये का प्रलोभन देकर ये ईसाई मिशनरी उनके धर्म को भ्रष्ट करते हैं तथा उन के छोटे-छोटे लड़के और लड़कियों को नाममात्र के स्कूल, अनाथालय खोलकर उनको छुटपन से ही ईसाई धर्म की शिक्षा, दीक्षा देते हैं। इस तरह ये ईसाइयों का बहुमत बनाकर हिन्दुस्तान को फिर अमेरिका के कब्जे में लाना चाहते हैं और इन्होंने कुछ पुस्तकें 'राम-परीक्षा' 'शिव-परीक्षा' 'कृष्ण-परीक्षा' व 'धर्मतुला' आदि, आदि पुस्तकों में भगवान राम, कृष्ण, शिव, ब्रह्मा, सती सीता के जीवनों पर खूब कीचड़ उछाली है और उन पुस्तकों को सुना सुना कर व भोले लोगों में मुफ्त बाँटकर हिन्दुओं को अपने धर्म से पतित किया जाता है। ऐसी अवस्था में प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि अपने देश जाति और धर्म की रक्षा व Defence के लिये जो उसका स्वतः सिद्ध अधिकार है करने को तैयार हो जाय। अतः हम अपने देश, जाति धर्म की रक्षा के लिये यह पुस्तक लिखकर उन के पूर्वजों की जिनको वह पैगम्बर, महात्मा और खुदा का बेटा कहकर व्यर्थ अलाप करते हैं उनके जीवनों की घटनाएँ व उनके कृत्य कर्म व दिनचर्या अपने हिन्दू भाइयों के वैदिक धर्म रक्षार्थ उपस्थित कर उनको चुनौती देते हैं कि हमारे राम, कृष्ण, और शिव का जीवन इतना पवित्र था कि ईसाइयों के पूर्वज उन के चरणों के रज के समान भी नहीं हो सकते। कहाँ उनका मुकाबला

कैसा और साथ ही में अपने ईसाई भाई, बहनों, माताओं व पुत्रियों से व बच्चों से नम्रतापूर्वक यही निवेदन करते हैं कि तुम्हारे पूर्वजोंमें कोई ऐसी बात शिक्षा और दीक्षा की नहीं है कि जो तुम्हारे जीवन के लिये लाभकारी हो। बल्कि भारत सांस्कृति में पले हुये और वैदिक धर्म में रँगे हुए ऋषियों का जीवन ही तुम्हारे लिए लाभकारी और शिक्षाप्रद हो सकता है। अतः यह 'सिक्यूलर स्टेट' है, सबको प्रचार का अधिकार है। मैं तुमको आर्य हिन्दू बनाने के लिये आह्वान करता हूँ और अपने हिन्दू व हरिजन भाइयों को सचेत करता हूँ कि वह इन धोखा देने वाले मिश्नरियों से सावधान रहें और अपने धर्म की रक्षा करें।

बाइबिल-परीक्षा

अर्थात्

वैदिक यज्ञ में मसीही मत स्वाहा

आजकल ईसाइयों ने अपने मिश्नरियों के द्वारा भारत में उधम मचा रक्खा है और चारों तरफ साम, दाम, दण्ड, भेद और रुपये का लोभ देकर भोले भाले हिन्दुओं को फुसलाकर उनके धर्म को भ्रष्ट कर रहे हैं। हमारी गवर्नमेंट इन सब बातों को देखकर भी चुप है और यह नहीं जानती कि मत परिवर्तन से राष्ट्र परिवर्तन हो जाता है। जैसे ईरान, मिश्र, अफगानिस्तान, काबुल।

किसी समय हिन्दुओं के गढ़ थे, किन्तु धर्म परिवर्तन से वह आज भारत तथा हिन्दुओं से कोसों दूर हैं। हम अपने ईसाई भाइयों से पूछते हैं कि तुम वेदों पर, शास्त्रों पर आक्षेप करते हो और उनको वास्तविकता को नहीं जानते। कृपा करके पहले मसीह को देखिये, जिनको आप प्रभू, मसीह व खुदा का बेटा व पवित्र आत्मा कहते नहीं थकते। आज हम इसा की परीक्षा ईसाइयों के सामने रखते हैं कि वह देखेंगे।

'मसीह की परीक्षा'

किसी मनुष्य के लिये यदि वह बेरहमी करे, जमीन पर आग लगाये और सब को दु:ख पहुंचाये और लोगों को कपड़े बेंचकर तलवारें खरीदने की आज्ञा दे, शराब पिये, गदहों को बगैर मालिक की आज्ञा के खुलवा ले व औरतों से प्रेम करे और शूली पर चढ़ाया जाय और उसके शिष्य स्वयं उससे कुछ प्राप्त न कर सके बल्कि उल्टा उसीको पकड़वा दे, हम उसको क्या कहेंगे ? अब इस वृत्तान्त को हम मसीह पर घटाते हैं और देखते हैं कि मसीह कितना पवित्र था।

ईसाई धर्म में और बाइबिल में साफ लिखा है—'इन्सान कौन है जो औरत से पैदा हुआ। क्या है कि वह सच्चा ठहरे ?' आयूब की पुस्तक १५ अध्याय १४ आयत। फिर लिखा है—'कौन है जो नापाक से पाक निकाले। कोई नहीं।'

(आयूब की पुस्तक १४ अध्याय ४ आयत)

फिर लिखा है—'क्या मिटने वाला मनुष्य ईश्वर के समक्ष सच्चा ठहरेगा।'

फिर लिखा है—'क्या मनुष्य अपने ईश्वर के समक्ष पाक होगा।'

(आयूब की पुस्तक अध्याय ४ आयत १७ व १८)

फिर उसी पुस्तक के अध्याय २५ आयत ४ में लिखा है कि 'ईश्वर के समक्ष इन्सान क्यों कर सच्चा समझा जाय।'

फिर यहुन्ना का पत्र अध्याय १ आयत ८ उसमें लिखते हैं कि 'अगर हम कहें कि बेगुनाह है तो हम झूठे और आपको धोखा देते हैं।'

फिर रूमियों का पत्र। अध्याय ३ आयत ११ व १३ में लिखा है-

'कोई अच्छा नहीं, कोई नेक नहीं।'

फिर इकबाल की पुस्तक। अध्याय २० आयत ९ में लिखा है—

"कौन कह सकता है कि मैंने अपने दिल को पवित्र किया है मैं पापों से मुक्त हूँ।"

अब आप यह बतलाएँ कि ऊपर के प्रमाणों को देखकर संसार में

कौन पवित्र है। क्योंकि सभी अपवित्र स्त्रियों से पैदा हैं। चूँकि मसीह, मरियम स्त्री से पैदा था। वह कभी पवित्र नहीं हो सकता। जब वह स्वयं अपवित्र था तो कैसे संसार को पवित्र कर सकता है।

एक जगह वह स्वयं अपने को कहता है—'लूका की पुस्तक बाब (अध्याय १८ आयत १९)

मसीह स्वयं कहते हैं—'तू मुझे नेक क्यों कहता है। कोई नेक नहीं। केवल एक ईश्वर है।'

मरकस की अक्षीर। अध्याय १० आयत १८ में यही लिखा है।'

'तू मुझको नेक क्यों कहता है। नेक कोई नहीं। मगर एक यानी खुदा।' इसी तरह से मिती की पुस्तक। अध्याय १९ आयत १७ में मसीह ने कहा है—'तू मुझ से नेकी की बाबत क्यों पूछता है। नेक तो एकही है।'

अब ऊपर लिखित प्रमाणों से मसीह स्वयं अपने को नेक नहीं मानता क्योंकि वह जानता था कि स्त्री अपवित्र है। उससे पवित्र नहीं हो सकता। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है।

मसीह ने स्वय अपने को अपवित्र माना है बल्कि अपने से पहले को ऐसे शब्दों में प्रयोग किया है कि हमारी सांस्कृति हमको आज्ञा नहीं देती कि हम अपनी भाषा में कहें। बल्कि मसीह ही के शब्द हम लिखे देते हैं।

(देखो यहुन्ना की पुस्तक। अध्याय १० आयत ८)

मसीह कहते हैं कि 'मुझसे जितने पहले आये वे सब चोर औरा डाकू हैं।'

अब हम अपने ईसाई भाइयों से पूछते हैं कि मसीह के माता पिता व मूसा, जकरिया सुलेमान, दाऊद आदि आदि जितने नबव पैगम्बर हुये। क्या ईसाई भाई इनको इन्हीं नामों से सम्बोधन करेंगे जिनको मसीह ने किया है।

मसीह खुदा का बेटा नहीं। बल्कि यूसुफ बढ़ई का बेटा है।

हम नहीं कहते बल्कि मसीह के शिष्यों ने खुद मसीह को खुद

का बेटा नहीं माना है। देखो मती की पुस्तक। अध्याय १३ आयत ५५।

क्या यह बढ़ई का बेटा नहीं और उसकी माँ मरियम नहीं कहलाती।'

और देखो लूका की पुस्तक। अध्याय ३ आयत २२ व २३।

जब मसीह उपदेश करने लगा तब उसकी आयु ३० वर्ष की थी और यूसुफ का लड़का था।

और देखो मरकस की पुस्तक। अध्याय ६ आयत ३।

क्या वही बढ़ई नहीं जो मरियम का पुत्र और याकूब व यूसिस यहूदा व समीन का भाई है। क्या उसकी बहन हमारे यहाँ नहीं रहती।

इसमें भी कहा गया है कि मसीह बढ़ई है और जो यूसुफ बढ़ई का पुत्र था।

और देखो यहुन्ना की पुस्तक। अध्याय ६ आयत ४२।

'और उन्होंने कहा यह यूसुफ का पुत्र नहीं जिसके माता और पिता को हम जानते हैं।'

अब हम ऊपर लिखे प्रमाणों से संसार के पादरियों को खुली चुनौती देते हैं कि वह आयें और इन प्रमाणों को झूठा सिद्ध करें और मसीह को खुदा का बेटा सिद्ध करें।

खुदा के बेटे कौन हैं।

आदम खुदा का पुत्र है। लूका की पुस्तक। अध्याय ३ आयत ३८।

और देखो। धन्य हैं वह जो मेल कराते हैं क्योंकि वह परमात्मा के पुत्र कहलायेंगे। मिती की पुस्तक। अध्याय ५ आयत ६।

और देखो। रूमियों का पत्र अध्याय ८ आयत १४ में लिखा है।

'जितने इन्सान खुदा के चलाये चलते हैं वे ही परमात्मा के पुत्र हैं।'

फिर ईसाई ईसू को खुदा का बेटा कहते हुये क्यों नहीं दिल में शर्माते। क्योंकि वह अपनी धर्म पुस्तक के विपरीत अलाप कर पाप कमाते हैं।

मसीह को प्रभु कहना महापाप है और नर्क में जाना है। हमारे पादरी बड़े जोरों से प्रभु ईसू मसीह के गुण गाते हैं और बार बार प्रभु मसीह, प्रभु ईसू मसीह कहते नहीं थकते। वह जरा इस प्रमाण को आंखे खोलकर पढ़ें।

देखो मिती की पुस्तक। अध्याय ७ आयत २१ में मसीह कहते हैं 'जो मुझको प्रभु कहेगा वह स्वर्ग में न जायगा।'

इससे सिद्ध होता है कि मसीह को प्रभु कहने वाला नर्क का अधिकारी है। अब मसीही पादरी और उनकी भेड़ें सोचकर बतावें कि मसीह को प्रभु कहकर कहाँ जायेंगे।

मसीह की कूटनीति

मसीह ने लोगों को फंसाने के लिए शांति के बड़े गुण गाये हैं एक जगह आप लिखते हैं कि 'जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा भी गाल उसकी तरफ कर दें।'

मिती की पुस्तक अध्याय ५ आयत ३९।

अब इसकी कूटनीति को देखिये। यह कहाँतक शान्त रहे।

देखो लूका की पुस्तक अध्याय १२ आयत ५१ में लिखा है—

'क्या तुम सोचते हो कि मैं पृथ्वी पर मेल कराने आया हूँ। मैं तुम से सत्य कहता हूँ कि नहीं। बल्कि लुदाई (लड़ाई) कराने आया हूँ।'

फिर देखो। लूका की पुस्तक अध्याय १२ आयत ५३।

'उसदिन बाप बेटे से दुश्मनी करेगा और बेटा बाप से। माँ बेटी से। बेटी माँ से। सास बहू से और बहू सास से।'

तलवारें खरीदने की आज्ञा

देखो लूका की पुस्तक अध्याय २२ आयत ३६।

उसने उनसे कहा—'जिनके पास तलवार नहीं है वह अपने कपड़े

(पोशाक) बेंचकर कपड़े खरीदे ।'

और देखो यहुन्ना की पुस्तक । अध्याय २ आयत १५ ।

'रस्सियों का कोड़ा बनाकर सबको (आदमियों यानी मेड़ों और बैलों को) मन्दिर से निकाल दिया ।'

और देखो एक जगह पर स्पष्ट लिखा है । लूका की पुस्तक । अध्याय २२ आयत ३८ ।

यह प्रभु यहाँ दो तलवारें हैं उसने उनसे कहा—यह बहुत हैं ।'

मेरे ईसाई भाई बतलायें जो मसीह लोगों को एक गाल पर थप्पड़ मारने से दूसरा गाल सामने करने का उपदेश देता हो वह फिर उन्हीं लोगों को तलवारें खरीदने की आज्ञा दे । लड़ाई कराये, बाप को बेटे, माँ को बेटी से अलग कराये और यहीं तक नहीं अपने कपड़े को बेचकर तलवारें खरीदने की आज्ञा दे वह संसार में अमन और शाँति कैसे फैला सकता है । यही कारण है कि मसीह की पालिसी को लेकर अमेरिकन पादरी रुपया बाँटकर ईसाई मत की आड़ में भारत में फूट डलवाने का कार्य कर रहे हैं और हमारी सरकार को हानि पहुँचा रहे हैं । जैसा कि नागा आदि जातियों में स्वतन्त्र राज्य की माँग इसका पूर्ण प्रमाण है । जिसको हमारे राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र-प्रसाद और प्रधानमंत्री पं० नेहरू अपनी आंखों से देख चुके हैं और पुर्तगाल की गोवा में जो दमननीति और क्रूरता का दिग्दर्शन हो रहा है वह मसीह की शिक्षा का और कपड़े बेंचकर तलवारें खरीदने का प्रत्यक्ष उदाहरण हैं । मसीह ने मधु (शराब) का प्रयोग किया मती की पुस्तक अध्याय ११ आयत १९ में लिखा है—"यहून्ना न खाता आया न पीता और वे कहते हैं कि उसमें बदरूह है । आदम का पुत्र खाता पीता आया, और वे कहते हैं कि देखो खाऊ और शराबी आदमी शुल्क लेने वालों आदि और मर्कस की पुस्तक अध्याय १४ आयत २५ मे लिखा है 'मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि अंगूर का शीरा (शराब) फिर कभी न पीऊँगा, उसदिन तक कि खुदा की बादशाहत में नया न पीऊँ । अंगूर के शीरे का हिन्दी में अनुवाद

द्राक्षारस और अंग्रेजी बाईबिल में शीरे की जगह पर Wine लिखा हुआ है इसका स्पष्ट अर्थ अंगूर की शराब है। लोग मसीह को शराब पीनेवाला न समझें इस डर से अंगूर का सीरा और अंगूर का रस उसका अनुवाद किया है।

'मसीह ने लोगों को शराब बाँटी' यूहन्ना की पुस्तक अध्याय २ आयत २ से ११ तक। 'गलेल में एक शादी हुई और ईशू की माँ वहाँ थीं और ईशू और उसके साथी भी वहाँ निमन्त्रित थे जब शराब पिलाई जा चुकी तो ईशू की माँ ने उससे कहा कि उसके पास शराब नहीं रही। ईशू ने उससे कहा 'ऐ औरत! मुझको तुझ से क्या काम अभी मेरा वक्त नहीं आया, उसकी माँ ने नौकरों से कहा 'अहा' जो कुछ ये तुम से कहें वह करो। वहाँ यहूदियों की पवित्रता के अनुकूल पत्थर के ६ मटके रखे थे और उनमें दो दो तीन तीन मन (चोज़) की गुंजाइश थी। ईशू ने उनसे कहा कि मटकों में पानी भरदो, फिर उन्होंने उनको ऊपर तक भर दिया और उसने उनसे कहा कि अब निकाल कर जलसे के प्रधान के पास ले जाओ, वे ले गये। जब प्रधान ने वह पानी चखा जो शराब बन गया था, और नहीं जानता था कि कहाँ से आई है इत्यादि।'

अब हमारे पादरी मित्र बतलावें कि जिनका प्रभु, खुदा का बेटा, मुक्तिदाता, मसीह जब खुद शराब पीता है और दूसरों को पिलाता है जो सबसे बढ़कर गुनाह है, वे किस मुँह से शिवजी को भंगड़ी कहकर मखौल उड़ाने का साहस कर सकते हैं। हम भंग को पीना बुरा मानते हैं और इस आदत को बुरा कहते हैं। हमने इसी कारण शिव को छोड़कर एक ओ३म् का सहारा पकड़ा और आर्य बने। क्या पादरियों में साहस है कि पादरी यीशू के शराब से भरे मटकों को फोड़कर आर्यसमाज की यज्ञ वेदी पर आकर अपने को पवित्र करें।'

और मसीह की मां मसीह से शराब मांगती है और मसीह उसे फटकार कर कहता है कि ऐ औरत मुझे तुझसे क्या काम है। यह कौनसी सभ्यता है। यह तो माता की बहुत बड़ी बेइज्जती है। यदि

कहो कि शराब पीना बुरा है, इसलिये मना किया तो मसीह ने खुद शराब क्यों पी और दूसरों को पिलाई। इसको पादरी लोग जरा गौर से पढ़ें।

'औरतों से मसीह का प्रेम'

हमारे पादरी भाई कृष्ण को गोपिकाओं के साथ प्रेम करने वाला कहकर उनको जार आदि शब्द से सम्बोधित करके खूब मखौल उड़ाते हैं और कहते हैं कि हिन्दुओं के ईश्वर ऐसे थे जो गोपिकाओं के साथ विहार करते थे। मैं उनको चुनौती देता हूँ कि वे कृष्ण पर झूठा आक्षेप है क्योंकि जब कृष्ण गोपिकाओं के साथ नाचते हैं और उनके वस्त्रों को वृक्ष पर ले जाकर बैठे थे, उस समय उनकी आयु (भागवत में ६ वर्ष लिखी है क्योंकि ८ वर्ष की उमर में उन्होंने कंस को मारा था, अब हमारे पादरी बतायें कि ६ या ७ वर्ष की उमर वाला बच्चा अगर गोपिकाओं के साथ नाचे और उनके वस्त्रों को उठा ले जाय और उनकी नग्न अवस्था पर उनके सामने हँसे, कोई आदमी उसको चोर या बद-माश नहीं कह सकता और न अदालत उसको सजा दे सकती है। अब पादरी लोग अपने मसीह के बारे में जिनकी आयु ३० वर्ष की है अपनी धर्म पुस्तकों की इन पंक्तियों का क्या उत्तर देंगे। देखो लूका की पुस्तक अध्याय १० आयत ३८ से ४२ तक में लिखा है :—

"फिर जब जा रहे थे तो वह एक गाँव में घुसा और मर्था नामक एक स्त्री ने उसे अपने घर में उतारा और मरियम नामक उसकी एक बहन थी, वह ईशू के पावों के पास बैठकर उसकी बात सुन रही थी लेकिन मर्था सेवा करते करते घबरा गई और उसके पास आकर कहने लगी ऐ प्रभु! तुम्हें ख्याल नहीं कि मेरी बहन ने सेवा करने के लिये मुझे अकेला छोड़ दिया है, तू उसे आज्ञा दे कि मेरी सहायता करे। मसीह ने जवाब में उससे कहा कि मर्था तू तो बहुत वस्तुओं की फिकर में है लेकिन एक वस्तु अवश्य है, वह मरियम ने अब हिस्सा चुन लिया है वह उससे छीना न जायगा।"

हम अपने पादरियों से पूछते हैं कि वह कौन सी सेवा थी जिसको करते करते मर्था थक गई और वह कौन सा बढ़िया हिस्सा मरियम ने चुन लिया जो उससे छीना नहीं जा सकता और फिर हम यह भी पूछते हैं कि ३० वर्ष का नौजवान औरतों से पैर दबवाये और सेवा करवाये यह कहाँतक ठीक है और उसपर हम कहाँतक प्रश्न करें कि जिससे उसकी पोजीशन खराब हो हालां कि मेरे मन में मसीह के प्रति बड़ी इज्जत है। यह सब मजबूर होकर प्रश्न कर रहा हूँ जबकि पादरी ६ वर्ष के भोले कृष्ण की जीवनी पर प्रश्न करते नहीं घबराते। दूसरी जगह मती की पुस्तक अध्याय २६ आयत ६ से १२ तक में लिखा है।

"जब यीशू मसीह कोढ़ी के घर में था तो एक औरत संगमरमर की इतरदानी में कीमती पत्थर लेकर उसके पास आई और जब खाना खाने बैठा तो उसके सरपर डाला उनके शिष्य यह देखकर खफा हुये और कहने लगे कि क्यों व्यर्थ लगाया गया यह तो बड़े दामों पर बिक कर गरीबों को दिया जा सकता था। यीशू यह जानकर यह कहा कि इस औरत को क्यों तंग करते हो इत्यादि। हम अपने ईसाई भाइयों से पूछते हैं कि मसीह के शिष्यों के होते हुए औरतों से तेल मलवाना व शिष्यों से क्रोधित होनेपर औरत की नाजायज तरफदारी करना कौन सा बड़प्पन है। क्या महात्मा लोगों का महात्मापन इसी में है कि औरतों से इतर की मालिश करायें। हमारे विचार में तो महात्मा लोगों को स्त्री के संपर्क से अलग ही रहना अच्छा है।

इसके अतिरिक्त यहन्ना की पुस्तक अध्याय ८ आयत २ से ६ तक में लिखा है "जब लोग उसके पास आये और वह बैठकर उनको शिक्षा देने लगा और एक फरीशी औरत को लाये जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी, और उसे बीच में खड़ा करके यीशू से कहा ऐ गुरु यह स्त्री ठीक व्यभिचार के समय पर पकड़ी गई है और। तेरित में मूसा ने हमें आज्ञा दी है ऐसी औरतों को पत्थरों की मार दें, तू इस स्त्री के बारे में क्या कहता है, उन्होंने उसे आजमाने के लिए कहा ताकि उसपर इलजाम लगाने का कोई कारण निकाले। जब मसीह कुमुक तक

उँगली से जमीन पर लिखने लगा, जब वे उससे सवाल करते ही रहे तो उसने सीधे होकर उनसे कहा कि जो तुम में बेगुनाह हों, वह ही पहले उसके पत्थर मारे और फिर झुककर पृथ्वी पर उँगली से लिखने लगा। यह सुनकर बड़ों से लेकर छोटों तक गये और यीशू अकेले रह गये और औरत वहीं बीच में रह गई।"

अब हम अपने ईसाई भाइयों से पूछते हैं कि किसी व्यभिचारी को व्यभिचार का दण्ड न देना कौनसा न्याय है जो राज्य ऐसा करे कि कौन ऐसा है कि जो चोरी, डकैती नहीं करता इस कारण चोरों और डकैतियों को सजा न दी जाये, उस राष्ट्र का क्या होगा। फिर मसीह ने उस औरत को क्यों छुड़वा दिया। क्या वह कोई उसकी संबंधित थी और यदि थी तो उससे किस प्रकार का सम्बन्ध था जब कि मती की पुस्तक अध्याय १६ आयत २७ में लिखा है कि "आदम का बेटा अपने बाप के साथ फरिश्तों को लेकर आयेगा, उसवक्त हर एक को उसके कामों के मुताबिक फल देगा।" अब बतलाइये जब ईसाइयों की इन्जील बतलाती है कि काम का बदला उसके अनुकूल मिलेगा और गलतियों की पुस्तक अध्याय ६ आयत ७ में लिखा है "मनुष्य जो बोता है वही काटेगा" फिर पादरी साहब बतायें कि मसीह ने इन ईश्वरीय नियमों के विपरीत ऐसा क्यों किया कि उस व्यभिचारिणी स्त्री को छुड़वा दिया। ऐ ६ वर्ष के पवित्र कृष्ण के पवित्र जीवन पर लांछन लगाने वाले ईसाइयो! हम मसीह पर कौनसा लांछन लगायें किन्तु हमारी आर्य संस्कृति इस बात की आज्ञा नहीं देती।

बिना आज्ञा किसी की वस्तु ले लेना—

ईसाइयों की धर्म पुस्तक में कई स्थानों पर लिखा पाया जाता है कि मसीह ने एक गाँव में एक गधी व गैर उसके मालिक की आज्ञा से खुलवा मँगाई मती की पुस्तक अध्याय २१ आयत २ से ६ तक में लिखा है "जब वे एरोशलम के निकट पहुँचे और जैतून के पहाड़ पर बैदफगा के पास आये तो मसीह ने अपने दो शिष्यों को यह कहकर भेजा कि

अपने सामने के गाँव में जाओ वहाँ पहुँचते ही एक गधी बँधी हुई और उसके साथ बच्चा तुम्हें मिलेगा। उन्हें खोलकर मेरे निकट ले आओ अगर कोई तुम से कुछ कहे तो कहना कि यह खुदावन्द को दरकार है इत्यादि। मसीह की आज्ञा के अनुकूल उनके शिष्यों ने वैसा ही किया। इसी प्रकार मर्कस की पुस्तक अध्याय ११ आयत १ से ६ तक और लूका की पुस्तक अध्याय १९ आयत ३० व ३४ में लिखा है। अब हम अपने पादरी भाइयों से पूछते हैं कि किसी की चीज़ को बिना आज्ञा खुलवा लेना कौन सी सच्चाई है। क्या यह चोरी नहीं। और अगर लोग पूछें तो गधी के ले जाने वाले कहदें कि मालिक ने मँगवाई है, यह कौन सी सच्चाई है, यह तो एक धोखा है। मसीह को यदि गधी की आवश्यकता थी तो गधी के मालिक से आज्ञा लेकर दे अथवा मोल ले लेते। यह तरीका तो अच्छा था मगर यह तरीका ठीक नहीं जो बिना आज्ञा के गधी को खुलवा लिया। क्या ईसाई पादरी इसका उत्तर देंगे कि ६ वर्ष का कृष्ण किसी का मक्खन लेने पर तो चोर हो सकता है और उसको ईसाई पुस्तकों में माखन चोर लिखा जाता है लेकिन गधी को बिना आज्ञ खुलवाने वाला जिसकी आयु ३० वर्ष की हो वह उनकी दृष्टि में पवित्र रहे, यह कैसे हो सकता है। सब बुद्धिमान इस पर सोचें और विचारें।

'मसीह को हम क्या कहें'

इसतसना की पुस्तक अध्याय २१ आयत २३ में लिखा है कि 'जो फाँसी दिया जाता है वह ईश्वर का तुस्कृत (मलऊन) है।' इसी प्रकार गलतियून की पुस्तक अध्याय ३ आयत १३ में लिखा है कि जो लकड़ी पर लटकाया गया वह लानती है। और अब दूसरी जगह इसी पुस्तक अध्याय ३ आयत २ म लिखा है कि मसीह सूली पर दिखाया गया। पादरी भाई बतायें कि उनका सभी का ईमान है कि मसी को सूली दी गई और इधर उनके शिष्य कहते हैं कि सूली पर चढ़ने वाला तुस्कृत (मलऊन) और लानती है। अब हम इसपर मसी

के बारे में क्या फैसला करें, यह हम अपने ईसाई भाइयों पर छोड़ते हैं।

'ईसाइयों में कोई ईमानदार नहीं और न कोई मुक्ति पाने के योग्य है।'

देखो मर्कस की एक्स अध्याय १६ आयत १७ व १८ में लिखा है "जो मुझपर ईमान लायेंगे उन के साथ यह चिन्ह होंगे, वह मेरे नाम से देवों को निकालेंगे और नई भाषायें बोलेंगे, सांपों को उठाएंगे और अगर कोई विषैली चीज़ पियेंगे, उन्हें कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे तो चंगे हो जायेंगे।' इसी प्रकार मत्ती की पुस्तक अध्याय १७ आयत २० व २१ में लिखा है कि 'मैं तुमसे सत्य कहता हूँ कि अगर तुम में राई के दाने के बराबर ईमान होता तो अगर तुम इस पहाड़ से कहते कि यहाँ से वहाँ चला जा, तो चला जाता और कोई बात असंभव न होती।"

समीक्षा—

अब हम अपने पादरी दोस्तों से पूछते हैं कि कितने ईमानदार और मोक्ष में जाने वाले योरुप, अमेरिका और एशिया के पादरी हैं जो भोले भाले लोगों को मसीह मोक्षदाता के नाम पर उनके धर्म को भ्रष्ट करते हैं। हम उनकी परीक्षा लेंगे, वह आयें और परीक्षा में सफल हों। परीक्षायें निम्नलिखित होंगी :—

१—कम से कम पावभर संखिया खिलायेंगे।

२—१० साँपों से कटवायेंगे।

३—भारत के गिरजाघर योरुप में और योरुप के गिरजाघर भारत में बदलने होंगे।

४—कम से कम टीबी के ४ रोगियों पर हाथ रखकर अच्छा करना होगा।

यदि इन परीक्षाओं में बड़े बड़े पादरी असफल हुए तो सब ईसाइयों और इञ्जील पर विश्वास करने वालों की परीक्षा लेंगे। यदि वे भी असफल हुए तो हम सबको जो मसीह पर ईमान रखने वाले हैं उनको

नरकगामी समझेंगे। यदि विश्व के किसी पादरी का साहस हो तो हमारी पूरी चुनौती है कि वे आकर शास्त्रार्थ करलें। नहीं तो मुक्ति के झूठे अनर्गल प्रलापों का करना व्यर्थ है।

मसीह के सब शिष्य विश्वास के योग्य नहीं—

ईसाई लोग मसीह के सच्चे होने में मसीह के शिष्यों की पुस्तकें पेश करते हैं। हम कहते हैं मसीह के शिष्य मसीह की दृष्टि में अविश्वासी थे।

देखो—पितरस का दूसरा पत्र अध्याय २ आयत १ से २ तक में लिखा है 'जिस तरह उस गुमत में झूठे नबी भी थे, इसी प्रकार तुम में भी झूठे गुरू होंगे। जो छुपे तौर पर मारने वाली बुराइयाँ निकालेंगे और उस मालिक का इनकार करेंगे।'

इसी प्रकार मर्कस की पुस्तक अध्याय १६ आयत १४ व १५ "फिर पीछे उन ११ को (शिष्यों का) भी जब खाना खाने बैठे थे, दिखाई दिया और उनको अविश्वास और घृष्टता पर मलामत की क्योंकि उन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था। इसी प्रकार मती की पुस्तक अध्याय १६ आयत ६ से ९ तक और मती की पुस्तक अध्याय १७ आयत १४ से ३१ तक।

अब हम अपने ईसाई भाइयों से पूछते हैं कि मसीह के ये ११ शिष्य मसीह की दृष्टि में ही अविश्वास के योग्य है तो फिर मसीह को सच्चा सिद्ध करने में वे कौनसी साक्षी देंगे। हमारे विचार में मसीह का अविश्वास सोलह आने ठीक था क्योंकि उनके एक शिष्य यहूदा इसकरूनी ने ३०) रु० के लालच में उसे पकड़वाकर सूली दिलवादी। क्या ईसाई लोग वैदिक ग्रन्थों से वैदिक ऋषियों को वेदों के द्वारा अविश्वास का पात्र बता सकते हैं।

हमारा निर्णय—

कुरान प्रथम अध्याय ६ आयत १० में लिखा है 'फरेब न खाओ

न हरामकार खुदा की बादशाहत के वारिश होंगे न मूर्तिपूजा न व्यभिचार न बदमाश, न चोर न लालची, न जालिम, न गालियाँ बकने वाले, और कुछ तुम में ऐसे ही थे भी। अब देखिये हजरत मसीह और उनके चेले इसके अनुकूल ठहरते हैं कि नहीं। मसीह ने बगैर आज्ञा पराई खुतवा ली, लोगों को शराब बाँटी, लोगों को गालियाँ दीं, मूर्तिपूजा की। इनके एक चेले यहूदा अस्करनी ने ३०) रु० के लालच में इनको शूली दिलवा दी और आज कल के ईसाई, यूरुप अमेरिका के रहने वाले ब्लेक मार्केट करने वाले, शराब के पीने वाले, एक दूसरे का माल पालिसी के साथ लेने वाले वह कैसे खुदा की बादशाहत में दाखिल होंगे।

जितने मालदार हैं वह सब नर्कगामी हैं—

मिती की इन्जील अध्याय १६ आयत २४, २५, २६ में लिखा है—

'मसीह कहता है, 'फिर मैं तुम से कहता हूँ कि ऊँट का सुई के नाके में से निकल जाना आसान है पर मालदार खुदा की बादशाहत (मोक्ष) में दाखिल हों।' इसका अर्थ यह है कि जितने पूँजीपति हैं वह सब के सब मसीह के कथन अनुसार नर्क में जायँगे। फिर अमेरिका, योरुप आदि देशों के मालदार लोग मसीह के कथनानुसार कहाँ जायँगे।

यदि मसीह सच्चा है तो यह नर्कगामी होंगे। इनके लिए अच्छा यही है कि शुद्ध होकर वैदिक धर्मी आर्य बनें।

ईसाइयों के रसूल पैगम्बर

ईसाइयों ने पुराणों पर और हिन्दू धर्म के ग्रन्थों पर तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों पर पुस्तकें लिखकर उनके ऋषी मुनी अवतारों पर खूब कीचड़ उछाली है। कहीं लिखते हैं कि ब्रह्मा ने उत्तरी के साथ ऐसा किया, कहीं लिखते हैं गौतम की स्त्री अहल्या के साथ इन्द्र ने व्यभिचार किया। कहीं लिखते हैं कि शिव जी कामी थे। कहीं

लिखते हैं कि सीता जी, राम की बहिन थीं। इत्यादि दिवंदन्तियों सुनने में आती हैं।

पहले हम इनका उत्तर देते हैं। ब्रह्मा चारों वेदों को जानने वाले को कहते हैं। संस्कृति में "वेदाति ब्रह्मा भवति" और ब्रह्मा की पुत्री का नाम सरस्वती है। वह विद्या है। अब इन अज्ञानियों से पूँछो कि चारों वेदों के विद्वानों से जब सरस्वती से सम्पर्क होगा तो उस से बड़े बड़े विद्वान, तत्ववेदा पैदा होंगे। यहाँ व्यभिचार की मात्र भी नहीं पाई जाती। अब रहा गौतम की स्त्री अहिल्या।

उसका अर्थ सुनिये। गौतम नाम चन्द्रमा। और अहल्या नाम रात्रि का। इन्द्र नाम सूर्य का। अर्थात् चन्द्रमा की स्त्री रात्रि को सूर्य अङ्गीकृत करता है। यह एक अलंकार है जिस तरह कि ब्रह्मा का अलंकार था। इसी प्रकार शिव कामी नहीं थे। उनका तीसरा नेत्र काम को जलाने वाला था।

कहाँ सीता और राम का सम्बन्ध यहाँ ईसाइयों की अनभिज्ञता पर जितनी भी हँसी आये थोड़ी है।

अब हम अपने ईसाई भाई से पूछते हैं कि वह अपनी बाइबिल की धर्म पुस्तक की पंक्तियों और प्रमाणों का अर्थ समझाने की चेष्टा करें। जैसा कि हमने पुराणों का समझाया है।

लूत पैगम्बर

उत्पत्ती की पुस्तक अध्याय १६ आयत ३० से ३७ तक में लिखा है कि लूत सुगर से अपनी दोनों बेटियों समेत निकलकर पहाड़ पर जा रहा क्योंकि सुगर में रहने से उसको डर हुआ और वह और उसकी दोनों बेटियाँ एक गार (खोह) में रहने लगीं। तब बड़ी ने छोटी से कहा, 'हमारा बाप बूढ़ा है और पृथ्वी पर कोई मानव नहीं जो संसार के नियम के अनुकूल हमारे पास आवे। आओ हम अपने बाप को शराब पिलायें और उससे भोग करें ताकि अपने पिता से अपनी संतान कायम करें। सो उन्होंने उसी रात अपने बाप को शराब पिलाई

और बड़ी लड़की अन्दर गई और अपने बाप के साथ विषय भोग किया। उसने उसके लेटने और उठते समय उसे न पहिचाना।

दूसरे दिन ऐसा हुआ कि बड़ी बहन ने छोटी से कहा कि देख कल रात को मैंने अपने पिता के साथ भोग किया और आज रात को उसको शराब पिलाये और तू जाके उससे विषय भोग कर। अपने पिता से सतान पैदा करें। सो उस रात को उन्होंने अपने बाप को फिर शराब पिलाई और छोटी ने उसके साथ भोग किया और उसने फिर उसे लेटने और उठते समय उसे न पहिचाना।

सो लूत की दोनों बेटियाँ अपने बाप से गर्भवती हुईं इत्यादि।

आगे यहाँतक लिखा है कि दोनों लड़कियों से दो लड़के पैदा हुये।

टिप्पणी

कृपा कर के ऊपर के प्रमाण का अर्थ ठीक ठीक समझाइये। हमारी और ईसाइयों की पुत्रियाँ इससे क्या शिक्षा ले सकती हैं।

उत्पत्ती की पुस्तक। अध्याय १६ आयत १ से ११ तक।

और दो आसमानी दूत रात को सदूम (ग्राम) में आये और लूत सदूम के फाटक पर बैठा था। लूत उन्हें देखकर उनके सम्मान के लिये उठा और अपना सर जमीन तक झुकाया और कहा, ऐ मेरे खुदा वन्द आप बंद के घर चलिये और रात भर रहिये और पाँव धोइये और प्रातः उठकर अपनी राह लीजिये' इत्यादि—

आगे लिखते हैं कि वह लूत के घर में ठहरे और उससे पहिले कि वे लेटे शहर के मर्दों और जवान से ले फिर बूढ़े तक, सब लोगों ने उस को घेर लिया और उन्होंने लूत को पुकार कर कहा, वह मर्द आज की रात तेरे यहाँ आये हैं वह कहाँ हैं! उन्हें हमारे पास बाहर ला ताकि हम उनसे सोहबत करें।' तब लूत दरवाजे से उनके पास बाहर गया और किवाड़ अपने पीछे बन्द किया और कहा कि ऐ भाइयो, ऐसा

बुरा काम न कीजिये। अब देखो मेरी ये दो बेटियाँ हैं जो मर्द को नहीं जानतीं। मर्जी हो तो उनको तुम्हारे पास निकाल लाऊँ और जो तुम्हारी नजर में पसन्द हो उनसे करो।'

मगर इन मर्दों से कुछ काम न रक्खो। इत्यादि इत्यादि।

टिप्पणी

हम अपने अमेरिकन दीवाने पादरियों से पूछते हैं और हिन्दुस्तान के ईसाइयों से नम्र निवेदन करते हैं कि बोलो तुम्हारी बेटियाँ, मातायें, बहनें, लड़के ऊपर की पंक्तियों के गूढ़ अर्थ से क्या शिक्षा लें।

इब्राहीम नबी का अपनी बहन से विवाह करना—उत्पत्ति की पुस्तक अध्याय १२ आयत १० से १९ तक।

इब्राहीम मिश्र के निकट पहुंचा तो उसने अपनी पत्नी श्री को कहा देख मैं जानता हूँ कि तू देखने में सुन्दर है और यों होगा कि मिश्र निवासी तुझे देखकर कहेंगे कि यह इसकी चिरसंगिनी है। सो मुझको मार डालेंगे और तुझे जीता रक्खेंगे सो तुम कहना कि मैं उस की बहन हूँ ताकि तेरे कारण मेरी शुभ हो इत्यादि।

इसी प्रकार अध्याय २० आयत १२ में लिखा है कि वह तो सच्ची मेरी बहन है, मेरे पाप की बेटी पर मेरी माँ की बेटी नहीं, सो मेरी बेटी नहीं मेरी स्त्री हुई।

समीक्षा।

अब ईसाई बतायें कि इब्राहीम व उसकी स्त्री का कौन रिश्ता है। क्या अब भी ब्रह्मा का सरस्वती का अनुचित सम्बन्ध दिखा कर हिन्दू धर्म पर आक्षेप करने का साहस करेंगे, यद्यपि ब्रह्मा और सरस्वती का अर्थालंकार हम पूर्व लिख चुके हैं जिसका यह अर्थ ही नहीं होता।

बहन और भाई का अनुचित सम्बन्ध—पुस्तक नं० २ समूएल अध्याय १३ आयत १४ में दाऊद ने तिमर के घर

कहला भेजा और उसके लिए भोजन पका, तब तिमर अपने भाई आमनू के घर गई और वह बिस्तर पर पड़ा हुआ था। और उसने आटा लेकर गूँधा और उसके सामने फुलके बनाये, और उन्हें लेकर उसके समक्ष एक थाली में रख दिया। पर उसने खाने से इन्कार कर दिया, तब आमनू ने कहा कि सब पुरुष मेरे पास से बाहर चले जाँय तब आमनू ने तिमर को कहा कि खाना कोठरी के अन्दर ला कि मैं तेरे हाथ से खाऊँ। तब तिमिर ने वह पकाये हुए फुलके आमनू के समक्ष कोठरी में लाई और जब वह खाना उसके सामने लाई कि उसे खिलाएँ तो उसने उसे पकड़ा और उससे कहा ऐ मेरी बुआ मुझसे आ सेग न कर। वह बोली नहीं भैया मुझे बदनाम न कर। इसराइल में ऐसा कार्य करना अच्छा नहीं है, तू ऐसी मूर्खता न कर और मैं क्या करूँगी और कैसे अपनी बदनामी को छिपालूँगी, तू इसराइल के मूर्खों में से एक होगा। तू बादशाह से कह वह तुझको मुझसे मना न करेगा। उसने उसकी बात न मानी और वह शक्तिशाली था तब उसने जबरजस्ती करके विषय भोग किया इत्यादि।

समीक्षा।

ईसाइयों की धर्म पुस्तक में ऐसी अश्लील बातों से हमारे देश के कर्मठ भाई-बहिन क्या शिक्षा लेंगे जरा आँख खोलकर देख तो लें।

बेटा का अपनी माता से अनुचित सम्बन्ध—

पुस्तक नं० २ (समूयल अध्याय १६ आयत २२) सो उन्होंने महल की छत पर अबी सुलूम के लिये तम्बू खड़ा किया और अबसुलूम सारे बनी इसराइल के समक्ष अपने पिता की स्त्रियों के पास गया।

ससुर का अपनी पुत्र बधू से अनुचित सम्बन्ध—

तिमिर से यह कहा गया कि तेरा ससुर अपनी भेड़ों की ऊन कतरने के लिए तिमिनत को जाता है तब उसने अपने विधवा होनेवाले वस्त्रों को

उतार फेंका, और बुरका ओढ़ लिया और अपने को लपेटा और अनैम के स्थान में जो तिनिमत के रास्ते में है जा बैठी उसने देखा था कि शीला बड़ा हुआ और मुझे उसकी पत्नी नहीं बनाया है और यहूदा उसे देखकर समझा कि यह कोई कशबी (वेश्या) है क्योंकि वह अपना मुख छिपाये हुए थी। और वह रास्ते से उसकी तरफ को चली और उससे कहा कि मेरे साथ चलो और मैं तेरे साथ विषय करूँगा, उसने यह न जान पाया कि यह मेरी बहू है वह बोली मेरे साथ भोग करने के बदले में मुझे तू क्या देगा। वह बोला अपनी भेड़ों के गल्ले में से बकरी का एक बच्चा भेजूँगा। उसने कहा कि तू मुझे जब तक उसे भले जमानत में क्या देगा वह बोला मैं जमानत में तुझे क्या दूँ। वह बोली कि अपनी छाप और, लाली और अपना बाजूबन्द जो तेरे हाथ में है, उसने दिया और उसके साथ विषय भोग किया और उससे वह गर्भवती हुई इत्यादि—

समीक्षा—

अब मेरी ईसाई बहनें, मातायें, भाई, पिता आदिक उपरोक्त प्रमाणों से क्या शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं और किस प्रकार आर्य हिन्दू वैदिक धर्म पर आक्षेप कर भोले भाले अनपढ़ हिन्दुओं को ईसाई बना कर व रुपये का लालच देकर अपने ऊपर लिखित पूर्वजों की शिक्षा से क्या दीक्षा देते होंगे।

दाऊद नबी का एक स्त्री से व्यभिचार—(समूयल की द्वितीय पुस्तक अध्याय ११ आयत १ से ५)।

एक दिन रात्रि को ऐसा हुआ कि दाऊद अपने बिछौने पर से उठा और बादशाह महल पर टहलने लगा और वहाँ से उसने एक स्त्री को देखा जो नहा रही थी और वह बहुत सुन्दर थी, तब दाऊद ने उस स्त्री का समाचार जानने के लिए आदमी भेजे, उन्होंने कहा क्या वह इलियाब की पुत्री बितसबा और रिया की स्त्री नहीं और दाऊद ने लोगों को भेजकर उस स्त्री को बुला लिया और वह उसके पास आई

उनसे विषय भोग किया और अपने घर को चली। जाकर गर्भवती हुई।

सुलेमान नबी का बहुत विचित्र हाल—सुलेमान नबी के छन्द अध्याय ४ आयत १० से १४ तक।

ऐ मेरी बहन, ऐ मेरी स्त्री तेरा प्रेम क्या ही अच्छा है, तेरा प्रेम मदिरा से भी अधिक स्वादिष्ट है तेरे सिर की सुगन्धि सारी सुगन्धियों से श्रेष्ठ तेरे ओठों से मधु के बिन्दु टपकते हैं इत्यादि। आगे लिखा है कि मेरी बुआ मेरी स्त्री एक तालेबन्द उद्यान और एक स्रोता है इत्यादि

इसी प्रकार सलातीन की पुस्तक (प्रथम अध्याय ११ आयत ३ से ७ तक) में लिखा है सुलेमान उनसे उनका प्रेमी होके लिपटा उसकी ७० स्त्रियाँ और ३०० लौंडियाँ थीं इत्यादि।

मूसा नबी का बहुत विचित्र वृत्तान्त—

बन्दी स्त्रियों पर अमानुशिक अत्याचार और खुदा की आज्ञा तथा व्यभिचार—मुक्ति अर्थात् सूर की स्तक (अध्याय ३१ आयत १० से १४ तक) जब लूत लड़ाई के लिये अपने शत्रुओं पर आक्रमण करे और तेरा खुदा उनको तेरे हाथों में बन्दी बनाया और उन स्त्रियों में जो तू खूबसूरत स्त्री देखे और तेरा जी चाहे कि तू उसे अपनी स्त्री बनाये तो तू अपने घर में ला करके उसका सिर मुड़वा और उसके नाखून कटवा और उसके बन्दी के वस्त्र उतार दे अपने घर में रख और एक महीने में अपने माता पिता के गोद में बैठा रहने दे उसके बाद तू उसका पती बनकर उसके साथ विषय भोग कर।

ईश्वर की आज्ञा व मनुष्यों का कतलाम—निकास की पुस्तक (अध्याय ३२ आयत २७ से २९)।

इसराइल के खुदा ने (मूसा को) आज्ञा दी कि हर मर्द अपनी कमर में तलवार बाँधकर एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे तक अपनी छावनी में घूमो और प्रत्येक आदमी तुममें से अपने भाई और प्रत्येक आदमी अपने मित्र व सम्बन्धी को कत्ल करे और बनी लावी (जाति) में मूसा की आज्ञानुसार ऐसा ही किया।

ईसाइयों की इन्जील का अदभुत नमूना :—कुरन्थियोन की पुस्तक प्रथम अध्याय ७ आयत ३६ व ३७। नागरी की इन्जील जो इलाहाबाद में सन् १८७४ में छपी उसकी पंक्ति इस प्रकार है। "अगर कोई समझे कि मैं अपनी कन्या से शुभ कार्य करता हूँ और वह स्यानी होवे और ऐसा होना आवश्यक है तो वह जो चाहता है सो करे उसे कुछ पाप नहीं है। और उर्दू की इंजील में इस पंक्तियों को इस प्रकार लिखा है। यदि कोई यह समझे कि मैं अपनी उसी क्वारी लड़की की हकतलबी करता हूँ (अधिकार छीनना) जिसकी जवानी ढल चली है और जरूरत भी मालूम हो। तो इख्तयार है कि उसमें कुछ गुनाह नहीं वह उसका ब्याह होने दे—इत्यादि।

अंग्रेजी *Bitle* शब्दों में (*Let them marny*) का प्रयोग किया है।

समीक्षा

वह पादरी और ईसाई धर्म तुला पृष्ठ ७ हिन्दी इलाहाबाद—में लिखते है और हिन्दू अवतारों पर लांछन लगाते हैं कि शास्त्र और पुराणों से निश्चित होता है कि देवता आदि अवतार सब काम, क्रोध लोभ मोह और अहंकार के वश में थे उचित नहीं कि इस जगह में हम देवताओं के कुकर्म आदि बातों का वर्णन कर सकें। शास्त्र व पुराणों में उनके चरित्र का वर्णन बड़े विस्तार से लिखा है कि बहुत प्रकार के अनुचित कार्य इन देवताओं ने किया है वे सब पापी ठहरे। अब कहिये कि क्या किसी पापी की पूजा या उस मूरत की पूजा करना उचित है या अनुचित आगे चलकर लिखा है कि कई देवताओं ने पराई स्त्रियों के साथ अनुचित सम्बन्ध किया।

समीक्षा

हम उन अविद्या अन्धकार में पड़े हुए पादरियों को खुली चुनौती देते है कि वह संस्कृत से अनभिज्ञ होने के कारण वह यह नहीं समझ

सके कि देवताओं का नाम ईश्वर का ही गौणिक नाम है अथवा प्रकाशवान लाभदायक वस्तु का ब्रह्मा चारों वेदों के विद्वान को कहते हैं और सरस्वती नाम उसकी विद्या का है वह उसमें रमन करता है और उससे विद्वान छात्र पैदा होते हैं, यहाँ पिता पुत्री का सम्बन्ध है ही नहीं और न हजरत लूत के तरह से अपनी लड़कियों से लड़के ही पैदा किये हैं। और रहा गौतम की स्त्री अहिल्या का इन्द्र के साथ विषय विलास वह भी पादरियों की अज्ञानता का कारण है जो समझते नहीं गौमन नाम चन्द्रमा का है और अहिल्या नाम रात्रि का है वह चन्द्रमा की चिरसंगिनी है और इन्द्र नाम सूर्य का है जब सूर्यरूपी इन्द्र रात्रि की कक्षा में आलिंगन करता है तो दिन हो जाता है इसमें एक अलंकार जो मूर्ख लोग न समझें तो हम कैसे समझ ये कृपा कर के किसी विशिष्ट सनातन विद्वान से ही समझ लिया होता रही शिव परीक्षा, व कृष्ण परीक्षा इनका भी मुँहतोड़ उत्तर देखो।

ईश्वर शिव को ईसाई कामी कहते हैं परन्तु शिव को किसी भी पुराण में कामी नहीं लिखा है शिव के तीन नेत्र बताये जाते हैं। तृतीय नेत्र काम को भस्म करने वाला जो स्वयं अपने काम और दूसरे व्यक्तियों के काम को नष्ट करने वाला है वह कामी किस प्रकार हो सकता है। यह सब अनर्गल प्रलाप है। तथा यह व्यर्थ अनर्गल प्रलाप संस्कृत साहित्य के अलंकारिक ज्ञान न होने का कारण है। अब रहा कृष्ण के सम्बन्ध में कि वह कामी चोर और व्यभिचारी थे पादरी लोग अपनी ज्ञान के चक्षुओं को खोलकर भागवत व कृष्ण के विशिष्ट चरित्र को बहुत ही गहन अध्ययन के द्वारा समझें कृष्ण ने आठ वर्ष की उम्र में कंस को मारा था इससे पूर्व ही माखन चोरी, वस्त्र हरण, नृत्यादिक कार्य किये थे। वह आयु पाँच छै वर्ष की होगी इस अवस्था में को बाल क्रीड़ा करते हुए किसी का मक्खन उठाले या नहाती हुई स्त्रियों के वस्त्रों को उठाले अथवा उनके साथ नृत्य करने लग जाय तो उसको कोई चोर, गुण्डा आदि नहीं कह सकेगा। क्योंकि वह भोला भाला पाँच छै वर्ष का बच्चा है।

5285

किन्तु ईसाइयों के नबी रसूल

इब्राहीम जिसकी स्त्री बहन थी और पत्नी इसका पता नहीं वह झूठ बोला और दाऊद ने भी एक स्त्री से व्यभिचार किया और दाऊद नबी के बेटे आमनू ने अपनी बहन से विषय भोग किया अबी सलूम दाउद नबी के लड़के ने बहुत से मनुष्यों के समक्ष अपने बाप की स्त्रियों के पास अन्दर गये और जाकर भोग किया। तिमिर ने अपने ससुर यहूदा से भोग किया, खुदा ने मूसा को आदमियों के मारने और बन्दी स्त्रियों को अपने घर में डालने की और सम्बन्ध करने की आज्ञा दी। लूत नबी ने अपनी क्वारी लड़कियों से शराब पीकर भोग किया और दो लड़के पैदा किये सुलेमान जी की विचित्र अवस्था है। हजरत मसी ने एक वर्श्री को खुलवा लिया स्त्रियों के साथ मकानों में रहे और उनसे इतर लगवाया, शराब पी और पिलाई अब ईसाई पादरी कृपा करके मुझे समझायें कि वह हिन्दुओं के अवतार कृष्ण पर और ब्रह्मा गौतम शिवादि नामों पर जो आक्षेप करते हैं किसी निर्णायक भवन में मुकदमा जाये तो कृष्ण भोले नाबालिग को ब्रह्मा, गौतम, आदि अलं–कार की शिव आदि काम को भस्म करने वाले को दण्ड देगी अथवा ईसाइयों के जिन्होंने जवान होकर समस्त कार्य ईश्वर की आज्ञा समझ कर किये और ऐसे काम किये जिनको लिखते हुए हमारी लेखनी भी संकोच करने लग जाती तथा शर्माने लग जाती है क्योंकि ईसाई हमारे एकरूपेण भाई हैं और उनकी माताएँ, बहनें, हमारी माताएँ, बहनें हैं बोलो निर्णायक व्यक्ति इनके पूर्वजों को क्या दण्ड देगी। हमारी तो यह सुव्यवस्थित तथा सुन्दर राय है कि हमारे ईसाई भाई अपनी पुस्तकों में से इन खराब पंक्तियों को निकालकर बाहर फेंकदें। ताकि आजकल के 'साहित्यिक' विज्ञान के युगमें ईसाई धर्म और उनके पूर्वजों का जीवन उज्वल हो सके और किसी को आक्षेप करने का साहस प्राप्त न हो सके। जैसे हमने हिन्दू धर्म में से कपोल कल्पित बातों को निकाल कर फेंक दिया वैदिक रास्ते को ही प्रमुख

स्थान दिया।

यही हमारी सद्भावना है और इसी भाव को लेकर हमने इस पुस्तक को लिखा है।

नियोग न करने पर सजा—

एक पुस्तक आर्य दयानन्द और मसीही मत में उसके लेखक आर० डब्लू० जोजफ हैं, पृष्ठ ३० पर लिखते हैं इससे स्पष्ट है कि नियोग आर्यों में बहाना मात्र है। नियोग के नाम से धर्म की आड़ लेकर व्यभिचार और वेश्यावृत्ति को स्वतन्त्रता दी गई है, क्योंकि कि स्त्री का किसी अन्य पुरुष के साथ किसी भी अवस्था में सम्बन्ध होना अनुचित है।

हम अपने ईसाई मत के प्रचारक श्री आर० डबल्यू० जोज़फ से निवेदन करते है कि हमारे यहाँ नियोग आपत्तिकाल संतान न होना मर्द नपुन्सक होना, और संतान गोद न मिले तब आपत्तिकाल में लिखा है किन्तु जो आर्य और स्त्री धर्मात्मा और सदाचारी, और ब्रह्मचर्य को पूरा करके ग्रहस्थ आश्रम में आये होंगे वह यदि नपुन्सक हो गे तो कभी शादी नहीं करेंगे और पुत्रहीन होंगे तो दत्तक पुत्र ले लेंगे वह सदाचारी होंगे और व्यभिचार धर्म से कोसों दूर रहेंगे फिर यहाँ तो नियोग सर्वथा असम्भव और बिल्कुल न होने के मात्र है क्योंकि उनका लक्ष है "मातृवत् परदारेषु पर द्रव्येषु काष्टवत्। आत्मवत् सर्व भूतेषु या पश्यति स पण्डितः।" इस सिद्धान्त के मानने वाले हैं। वह तुम्हारे नबी और रसूल जैसे अकृति कर्म के करने वाले नहीं हैं।

जिन्होंने नियोग न करने पर सजा भी मुकर्रर करदी है। देखो छूठ की पुस्तक (अध्याय २५ आयत ५ से १०) में लिखा है अगर कई भाई एक स्थान पर रहते हों और उनमें से एक की औलाद मर जाय तो उस मरे हुए पुरुष की स्त्री का व्याह किसी अन्य से न किया जाय बल्कि उसके पती का भाई उससे विवय करे और उसे अपनी पत्नी बनाले और भावज का हक उससे पूरा करे। और यों होगा कि जो उसका **प्रथम**

बेटा पैदा हो तो वह मरे हुए भाई के नाम पर होगा ताकि उसका नाम इसराइल में से मिट न जाय। अगर यह भाई की स्त्री लेना न चाहे तो उस मरे भाई की स्त्री दरवाजे पर पुरुषों के पास जाय और कहे कि मेरे पति के भाई ने अपने भाई का नाम बहाल रखने से इन्कार किया और भावज का हक अदा नहीं किया तब उस शहर के बड़े लोग उस आदमी को बुलायें और उससे पूछे यदि वह अपनी बात पर अड़ा रहे और कहे कि मैं नहीं चाहता कि उसे लूँ तो उसके भाई की स्त्री बड़ों के सामने उसके निकट आये और उसके पैर की जूती निकाल कर उसके मुँह पर थूक दे और जवाब दे और कहे और उस पुरुष के साथ जो अपने भाई का घर न बनाये यही किया जायेगा, इत्यादि।

समीक्षा

अब हम पादरियों से नम्र निवेदन करते हैं कि तुम नियोग की ऐसी शिक्षा देते हुए यह कैसी भ्रष्टता करते हैं कि नियोग दुराचार, व्यभिचार और वेश्यावृत्ति है। जरा ज्ञान चक्षुओं से नियोग की महत्ता को समझें।

ईसाइयों का ईश्वर—

धर्मतुला पृष्ठ ४ पर इसका लेखक लिखता है कि कई लोग मन्दिरों और स्थानों में लकड़ी पत्थर आदि की मूर्ति स्थापन करके पूजते हैं। अब विचार करना चाहिये कि मूर्ति क्या वस्तु है। बढ़ई काठ के कुछ टुकड़े को अपने हथियारों से ऐसा गढ़ता है कि कोई मूर्ति बन जाती है और फिर हाथ, पैर, आदिक सब बना, रंग चढ़ाकर ग्राहक के हाथ बेच देता है इत्यादि। आगे चलकर लिखता है कि फिर मूर्ति का बनाने वाला पत्थर के दो टुकड़े लेकर आधे से कृष्ण या महादेव या किसी और की मूर्ति बनाते हैं और दूसरे से सिल या चक्की बनाता है। फिर पृष्ठ ६ पर लिखता है "ज बित ईश्वर को छोड़कर पूज काठ पाषाड़, तरिहै नाहीं कबहूँ वे धर्म ग्रन्थ प्रमाण।" वास्तव में ईश्वर का सूरत है न मूरत है क्योंकि वह आत्मा है। उसको किसी ने कभी नहीं देखा

और न कोई उसको देख सकता है। उसका न रूप है न रेखा है। और उसने मूरत को बनवाना और उसे पुजवाना तथा पूजना मना किया है। इसलिए जो कोई मूर्ति को बनाता पूजता या पुजवाता है वह अज्ञानी तथा पापी है इत्यादि।

हमारा उत्तर

हम इस ईसाई कुविचारक लेखक से ऊपर जितना भी तरस खायें उतना थोड़ा है इसको हिन्दुओं की मूर्ति पूजा पर तो पाप या अज्ञान विदित होता है किन्तु रोमन कैथलिक के गिरजाघरों में जो यूसफ मरियम और यूसीमसी की आदमियों के बराबर मूर्तियाँ रखकर बड़े बड़े लाल बुझक्कड़ पादरी सुगन्धियों को जलाकर उनके समक्ष मस्तक झुकाते हैं और सहस्त्रों ईसाइयों से मस्तक टिकवाते हैं क्या यह मूर्खता या अज्ञानता नहीं है? इसके अतिरिक्त इनकी धर्म पुस्तक बाइबिल *Bible* को देखो तथा उसका निरीक्षण भी करो तब पता चलेगा कि इनका ईश्वर कैसा है। यह ईश्वर का निराकार ढोंग रचने वाले अपनी पुस्तक *Bible* (उत्पत्ति अध्याय ११, आयत ५) में लिखा है कि खुदा उस शहर और बुर्ज को जिसे आदम के पुत्र बनाते थे देखने उतरा और उत्पत्ति की पुस्तक (अध्याय ६ आयत ६) में लिखा है कि खुदा पृथ्वी पर आदमियों को पैदा कर के पछताया तथा रोया। हम इन पादरियों से नम्र निवेदन करते हैं कि वह ईश्वर जो उतरे, पछताकर रोये यह कैसा निराकार ईश्वर है। और रोना, पछताना तो ईश्वर को मनुष्य से भी गिरा देता है और उसकी विशिष्ट सर्वज्ञता को भी नष्ट कर देता है हम अपने भोले पादरियों से यह प्रश्न भी पूछना चाहते हैं कि हम पिता पुत्र पवित्र आत्मा तीन को ही मानते हो यह तीनों मिलकर ईश्वर हैं या एक ईश्वर था उसके यह तीन भाग हो गये तो ईश्वर खण्डित हो गया और यदि तीन हैं तो तुम्हारे तीन ईश्वर विद्यमान हुये। तो ईश्वर है यह तुम्हारा आडम्बर एक व्यापक आडम्बर है और कृपा करके यह भी बतलायें कि रोने तथा पछताने वाला इन तीनों में से कौन सा है।

यदि कोई है तो वह बड़ा मूर्ख है जो रचनाकर के रोता तथा पछताता है यदि कहा जाय कि नहीं यह तीनों हैं तो तीनों ने मिलकर आसमान पर रो रो कर खूब मुहर्रम मातम किया हो आगे चलकर निकास की पुस्तक (अध्याय १२ आयत १३) में लिखा है कि खुदा ने इसराइल के पुत्रों को जब वे मिश्र थे उनको आज्ञा दी कि वे अपने मकानों पर लोहू का निशान लगादें, ताकि मैं रक्त को देखकर तुमको छोड़ दूँ और अय्यूब की पुस्तक (अध्याय १ आयत ७) में लिखा है कि ईश्वर शैतान से पूछता है कि तू कहाँ से आता है, शैतान उत्तर देता है कि मैं पृथ्वी के इधर उधर से फिर करके आता हूँ मेरी समझ में नहीं आता कि इनके ईश्वर को इतनी भी बुद्धि नहीं है कि लोगों के गुह्य को पहचान सके और शैतान के इधर उधर घूमने को जान सके क्या यह सर्वज्ञ ईश्वर है या सत्तर वर्ष का प्राचीन मनुष्य जिसका कि मस्तिष्क थक चुका है।

इनका खुदा झूठ भी बहुत बोलता है।

एक स्थान पर गिनती की पुस्तक (अध्याय २३ आयत १९) में लिखा है कि खुदा इन्सान नहीं जो झूठ बोले और न इब्रानियों की पुस्तक (अध्याय ६, आयत १० में) पौलूस रसूल लिखता है कि खुदा का झूठ होना मुमकिन नहीं किन्तु अब इसके विपरीत यर्मिया की पुस्तक (अध्याय ४ आयत १०) में लिखा है 'कि हाय ऐ खुदावन्द निश्चय तूने इसको और ऐरूसलूम को यह कहकर धोखा दिया कि तुम सलामत रहोगे। हालाँ कि तलवार जानपर लगी। इसी प्रकार तस्लूनी कुन की दूसरी पुस्तक (अध्याय २, आयत ११) में लिखा है कि 'इसी कारण से ईश्वर उनके पास तासीर करने वाली दुआ भेजेगा कि वह झूट को सच जानेंगे और सलातीन की प्रथम पुस्तक (अध्याय २२ आयत २३) में लिखा है कि 'खुदा ने झूठी रूह नबियों के मुँह में डाली।

समीक्षा

अब सज्जन तथा बुद्धिमान अपनी योग्यतानुसार विचार करें कि

ईसाइयों की धर्म पुस्तक *Bible* एक स्थान पर ईमानदार तथा सच्चरित्र बताती है और द्वितीय स्थान पर ईश्वर को असत्य बोलने वाला या दगाबाज बतलाती है। यदि यह किसी भी अदालत में ही बयान किया जाय तो तुरन्त ही दफा १११ व १८२ लगा दी जायगी।

इनके सर्व शक्तिमान ईश्वर की पोला यर्मियाँ की पुस्तक (अध्याय ३२ आयत २७) में लिखा है कि खुदा कहता है कि मेरे आगे कोई भी कार्य कठिन है जिसे मैं न कर सकूँ किन्तु काजियैन की पुस्तक (अध्याय १, आयत १६) में लिखा है कि खुदा यहोवा के साथ था और उसने पहाड़ के ऊपर के रहने वालों को न निकाल सका क्योंकि उनके पास लोहे की रेतियाँ थीं। क्या ईसाई बतलायेंगे कि उनका सर्व शक्तिमान ईश्वर वैसे तो अपनी वीरता का अतिशयोक्ति द्वारा वर्णन करे परन्तु जब कोई ऐसा अवसर आ पड़े तो पीछे हुए दिखाकर के भाग खड़ा हो। और देखिये यलीमी की पुस्तक (अध्याय ३ आयत ६) में लिखा है कि खुदा कहता है कि मैं खुदा हूँ बदलता नहीं और गिनती पुस्तक (अध्याय २३ आयत १९ में लिखा है कि खुदा इन्सान नहीं जो झूठ बोले और न आदमी से पैदा है कि वह पछताये और रोये किन्तु उत्पत्ति की पुस्तक (अध्याय ६ आयत ६) में खुदा का रोना तथा पछताना लिखा है। अब बताओ यह खुदा बदलने वाला है कि नहीं और उपरोक्त कहे हुए प्रमाण ठीक हैं अथवा निम्नलिखित प्रमाण।

ईसाइयों का खुदा कुम्हार है। यस्या नबी की पुस्तक (अध्याय ६४ आयत ८) में लिखा है ऐ खुदा तू हमारा पिता तथा हम तुम्हारे माठी हैं। तू हमारा कुम्भकार है हम तेरे बनाये हुए बर्तन हैं।

समीक्षा

अब ईसाई लोग जो दूसरों को अज्ञानी कहते हैं अपने ईश्वर की इस लीला को देखें जो वैज्ञानिकों के विज्ञान और बुद्धिमानी को ही नष्ट कर रहा है।

इसके अतिरिक्त ईसाइयों के ईश्वर का इकलौता होना और उस

मसीही बेटे का शराब पीना और पिलाना औरतों से तेल की मालिश कराना उनके साथ रहस्यमय बात करना किसी जुर्म के एवज में शूली पाना उसके एक शिष्य का पकड़वाना और शूली पर चढ़कर अपने बाप को रोकर पुकारना और बाप का सर्व शक्तिमान होकर न बचा सकना सिद्ध करता है कि ईसाइयों का कर्म व ईश्वर पूर्ण रूपेण आडम्बर है। और जो कुछ अच्छाई भी है वह विष मिश्रित दुग्ध के समान है जो सर्वदा त्याज्य है हम उनको सप्रेम और सद्भावना के साथ यही शिक्षा देंगे कि प्रायश्चित्त कर के वैदिक व सनातन धर्म स्वीकार करें ताकि उनका जीवन पवित्र तथा परोपकारी हो।

खुली चुनौती—

हम संसार के पादरियों और ईसाइयों को खुली चुनौती देकर आह्वान करते हैं कि वह भारत के किसी स्थान में हमारे साथ या हमारे पूज्य गुरुवर श्री० पं० कालीचरण जी (शास्त्रार्थ महारथी) तर्क वागीश के साथ शास्त्रार्थ करलें हमारा दावा है कि *Bible* धर्म पुस्तक नहीं इसमें मनुष्य जीवन सुधार की कोई बात नहीं है और न स्त्री पुरुष उससे कुछ शिक्षा ही ले सकते हैं। न उससे मुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। उसमें जो कुछ अच्छाई है वह विष मिश्रित दुग्ध के समान है ईसाइयों का कल्याण इसी में है कि वैदिक धर्म की पवित्र वेदी पर शुद्ध होकर अपने जीवन को पवित्र बनाकर वैदिक धर्मी बनें और कपिल, कणादि, गौतम राम, कृष्ण के चरणों में आकर अपने पाप की क्षमा याचना करें।

नम्र निवेदक :—

फीलखाना, पीली कोठी
चन्द्रभवन, कानपुर

चन्द्रधर त्रिपाठी
ईसाई धर्म समीक्षक तिमिरनाशक, तर्करत्न
कानपूर।

इस पुस्तक की ५०० प्रतियाँ श्रीमान् डा० जगदानन्द जी आर्य सुपुत्र श्रीमान् डा० फकीरराम जी आर्य को ईसाइयों में मुफ्त बटवाने के लिए धन्यवाद है।

विरजानन्द दण्डी
सद्धर्म पुस्
पु परिग्रहण क्रमांक .. 5285
स्वामी ... महा...